THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

मैं जुकाम के साथ उठा – क्या मुझे इसकी प्रक्रिया को भोगना पड़ेगा?

I WOKE UP WITH A COLD – DID I HAVE TO LET IT RUN ITS COURSE?

www.spirituality.com

Author – Dave Hohle

October 31, 2006

यह एक बहुत अच्छा अवसर था एक मित्र अपने एक निजी विमान में बॉस्टन तक आया और उसने मुझे फलोरिडा तक वापसी की एक सीट का प्रस्ताव दिया। मैं अपनी बहन और जीजा को उनके नए घर में देखना चाहता था, और इससे मुझे उनके और उनके नए पिल्ले के साथ समुद्र के किनारे पर समय बिताने का अवसर भी मिल जाता। और मेरे पास घर वापिस आने का रास्ता भी था, क्योकि मेरे जीजा ने मुझे अपनी वापसी यात्रा के लिए अपनी मोटरसाईकिल इस्तेमाल करने की पेशकश की थी।

क्योंकि यह एक छोटा विमान था और वजन एक मुद्धा था, मुझे हल्का सामान रखना था। मैने लगभग कोई कपड़े नही लिए, और अपना सारा ध्यान मोटर साईकिल पर वापिस घर आने और रास्ते में पड़ाव डालने पर केनद्रित कर दिया।

उड़ान बहुत अच्छी थी और मैने मोटर साईकिल की सवारी से पहले फलोरिडा के कुछ गर्म दिनों का आनन्द लिया और उत्तर की तरफ वापसी शुरू कर दी।

दूसरे दिन मैं उत्तरी कैरोलिना के नीले पहाड़ की चोटी पर था। यह अप्रैल का मध्य था, और उस ऊँचाई पर रात को ठंड़ हो गई। मुझे एहसास हुआ – बहुत देर बाद – कि हल्की पैकिंग ने मुझे एक सोने वाले बैग के साथ छोड़ दिया था जो कि परिस्थितियों के अनुकूल नहीं था। मैने गर्मी पाने के लिए संघर्ष किया।

सुबह मेरा गला इतना दर्द था कि मैं कुछ भी निगल नहीं पा रहा था। मैं विश्वास नहीं कर सका कि मैने ऐसा होने की अनुमति दे दी। परन्तु जैसे ही मैनें उस सुबह सवारी शुरू की, मुझे एक वाक्य याद आया जिसे मैने पिछली शाम को पढ़ा था। उस समय मेरे लिए इसका मतलब बहुत छोटा था, परन्तु सुबह मुझे यह अच्छी तरह से याद आया। यह मेरी बेकर ऐड़ी की पुस्तक साँयस एण्ड हैल्थ में से है; "यदि आपका मरीज जुकाम होने में विश्वास रखता है, तो उसे मानसिक रूप से समझाओ कि भौतिक पदार्थ को जुकाम नही हो सकता, और वह विचार इस दायित्व को संचालित करता है।"

** जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

मैं जानता था कि प्रत्येक रोग प्रार्थना के द्वारा ठीक हो सकता है।

जैसे ही मैंने सवारी शुरू की, यह वाक्य मेरे विचारों में गूंजता रहा। बहुत सालों से मैं वास्तविकता के मानसिक स्वभाव से परिचित हो चुका था। मुझे तथ्य की झलक साफ महसूस हुई कि **परमेश्वर** सदा अच्छा है, और मेरा उसके साथ रिश्ता शाश्वत और अटूट है। मैं जानता था कि कोई भी शारीरिक रोग प्रार्थना के द्वारा शीघ्र और स्थायी रूप से ठीक हो सकता है। इसलिए उस सुबह हवा मे निकलते हुए, मैंने सोचा कि कैसे यह इसे साबित करने के लिए एक और अवसर था।

मैंने अपने आप से पुछना शुरू किया कि ऐसा क्या है जो कि ''रोगी को आश्वस्त कर सकता है।'' मैंने सोचा, अच्छा यह शब्दों से ज्यादा है। आप सब कुछ शब्दों में कह सकते हैं जो आप कहना चाहते हैं, परन्तु आश्वस्त होने के लिए, मुझे वास्तव में विश्वास करना होगा।

तब मैने सोचा, ठीक है ऐसा क्यों है ''भौतिक पदार्थ को जुकाम नहीं हो सकता?'' सारा संसार सोचता है कि ऐसा ही है, परन्तु श्री मति ऐडी ने रहस्योद्घाटन किया कि भौतिक शरीर वास्तव में एक मानसिक धारणा है। भौतिक पदार्थ इसके लिए जिम्मेवार नहीं है।

उन्होंने लिखा, ''अपने शरीर का स्वामित्व ले लो, और इसकी अनुभूति और कार्यों को नियन्त्रित करो। **आत्मा** की शक्ति में उठो, उन सबके विरोध में जो अच्छे से विपरीत हैं। **परमेश्वर** ने मानव को इसके लिए सक्षम बनाया है, और कुछ भी मानव को उस क्षमता तथा शक्ति से वंचित नहीं कर सकता जो उसे दिव्य रूप से प्रदान की गई हैं''

जितना ज्यादा मैंने इसके बारे में सोचा उतना ही मुझे एहसास हुआ भौतिक पदार्थ को जुकाम नहीं हो सकता, कि भौतिक पदार्थ अपने आप कुछ नहीं कर सकता। इसमें कोई चेतना नहीं है। यह बोल नहीं सकता। इसमें सोचने की क्षमता नहीं है और न ही किसी मामले में आज्ञा देने की। **मन, परमेश्वर** ही पहल कर सकता है। शरीर केवल अनुसरण कर सकता है।

*यदि मैं **परमेश्वर** को आध्यात्कि रूप से प्रतिबिम्बित करता हूँ तब मैं परिपूर्ण हूँ। और किसी तरह का जुकाम सम्भव नहीं है।*

इसलिए, मैने लगातार तर्क किया कि भौतिक पदार्थ को जुकाम नहीं हो सकता। और **आत्मा** को नहीं होगा। क्यों नहीं? क्योंकि **आत्मा** केवल अच्छी, स्वस्थ और परिपूर्ण है। और यदि मैं आध्यात्मिक हूँ, मैं परिपूर्ण हूँ। क्योंकि अगर **आत्मा परमेश्वर** है और परिपूर्ण है और मैं **परमेश्वर** को आध्यात्मिक रूप से प्रतिबिम्बित करता हूँ, तब मैं परिपूर्ण हूँ। और किसी तरह का जुकाम सम्भव नहीं है। मैंने अपने आप से दोबारा पूछा, यदि भौतिक पदार्थ को जुकाम नहीं हो सकता और **आत्मा** को नहीं होगा, यह जुकाम आ कहाँ से रहा है?

मुझे समझ आई कि यह केवल एक झूठ है जो मेरी स्वीकृति के लिए अपने आप को पेश कर रहा है। यह एक झूठ था जो मुझे महसूस करवाना चाहता था कि मैं **परमेश्वर** से अलग हूँ। मैने दृढ़ निश्चय कर लिया कि मैं इस झूठ को अस्वीकार कर दूँ जो मेरे और **परमेश्वर** के बारे में था।

जब मैं आध्यात्मिक रूप से कहीं पहुँचता तो निर्रथकता का एहसास मेरे ऊपर छा जाता। मैने सोचा, तुझे जुकाम है। इसकी आदत डाल लो, जो तुम चाहते हो आपने आप से बातें करते रहो। लेकिन इससे सच बदल नहीं जाता।

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

लेकिन यह एक आध्यात्मिक तथ्य नहीं था – और इसलिए मुझे एकदम पता चल गया था, सब चीजो के बावजूद, कि मुझे अभी भी झूठ के साथ असहमत होना था और आध्यात्मिक सत्य के साथ सहमत होना था। मैने इस सुझाव को स्वीकार न करने का निर्णय लिया कि मुझे जुकाम था।

मैं कभी भी परमेश्वर की सुरक्षा से बाहर नहीं जा सकता

अन्त में – और यह स्वभाविक रूप से उस तर्क विर्तक में से निकला था जो मैं कर रहा था – मुझे एहसास हुआ कि मुझे जुकाम लग सकता है, अगर मैं जम गया हूँगा या ठंडा हो गया हूँगा, या परमेश्वर की देखरेख से अलग हो गया हूँगा, कुछ मिनट के लिए, कुछ घंटों के लिए या फिर पूरी रात के लिए। और मैं जानता था कि यह सम्भ्व नहीं था मैं कभी भी परमेश्वर की सुरक्षा से बाहर नहीं जा सकता। इस तर्क पर, मैं आश्वस्त हो गया था।

इस के बाद ज्यादा देर नहीं लगी, जब मैने ध्यान दिया कि मेरा गला सामान्य अवस्था में था और मैं स्वभाविक रूप से निगल सकता था। मैं लगभग एक घण्टे से प्रार्थना कर रहा था। परन्तु मैं अगले घण्टे दो घण्टे तक अपनी परिपूर्णता के लिए दावा करता रहा।

उस दोपहर मैने एक नया सोने वाला बैग खरीदा। अगले पाँच छः दिन तक, मैने सवारी की और पड़ाव डाला, बिना किसी समस्या के। मौसम ठण्डा ही रहा, परन्तु मेरे लिए कोई मुसीबत नहीं बना।

इस अनुभव ने मुझे दूसरे प्रस्तावों जो कि मेरी स्वीकृति के लिए आए उन्हें चुनौती देने और उनका खंडन करने के लिए प्रेरित किया।

शेक्सपीयर ने एक बार लिखा, ''क्या अत्यन्त क्रोधित भविष्य के पत्थरों और तीरों से मन में कष्ट पाना अच्छी बात है, या विपदा के समुद्र का सामना करना तथा विरोध करके उनका विनाश कर देना।'' (Hamlet,III,I) मैं विरोध करने का प्रस्ताव रखता हूँ।

Translation © 2009 The Christian Science Publishing Society. This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.